भजन

तर्ज...आवाज दे के हमें तुम
खता पर खता हम किये जा रहे है,
वो सागर मेहर के दिये जा रहे है

1) गुनाहों का अपने हिसाब न कोई
के उनकी मेहर का जवाब न कोई
के इस पर भी वो माफ किये जा रहे है

2) तुम्हीं ले के आयें अर्श से वाणी
मगर हमने उनकी कदर न जानी
यहीं तो सिला हम दिये जा रहे हैं

3) हमें भूल जाने की आदत पड़ी है
के उनको जगाने की मुशिकल बड़ी है
वे जो कर रहे है किये जा रहे है।